प्रातः क्लास 6/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। मीठे-2 रूहानी बच्चे रूहानी बाप के सामने बैठे हैं। बाप के सामने भी बैठे हैं, शिक्षक के सामने भी बैठे हैं और यह भी जानते हैं यह बाबा गुरु के रूप में आये हैं हम बच्चों को ले जाने लिए। बाप भी कहते हैं–हे रूहानी बच्चो! मैं आया हूँ यहाँ से तुमको ले जाने। यह पुरानी दुनिया बन गई है और यह भी जानते हो कि यह छी-छी दुनिया है। तुम बच्चे छी-छी बन गये हो। अपन को आपे ही कहते हो पतित-पावन बाबा आकर हम पतितों को इस दुःखधाम से सुखधाम ले जाओ। अभी तुम यहाँ बैठे रहते हो तो यह दिल में आना चाहिए, बाप भी कहते हैं मैं तुम्हारे बुलावे पर, निमंत्रण पर आया हूँ। बाप याद दिलाते हैं बरोबर तुम बुलाते थे ना–आओ। अभी तुमको स्मृति आई है, हमने बुलाया है। अभी बाबा आये हुये हैं ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल। वह लोग प्लैन बनाते हैं ना। यह भी शिवबाबा का प्लैन है। इस समय सभी के अपने-2 प्लैंस हैं ना। 5 वर्ष का प्लैन बनाते हैं। उसमें यह करेंगे, यह करेंगे। बातें देखो कैसी आकर मिलती हैं! आगे यह प्लैन आदि नहीं बनाते थे। अभी प्लैन बनाते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारे बाबा का भी प्लैन है। ड्रामा के प्लैन अनुसार 5000 वर्ष पहले मिसल मैंने यह प्लैन बनाया है। तुम मीठे-2 बच्चे जो यहाँ बहुत दुखी हो गये हो, वैश्यालय में पड़े हो। अभी मैं आया हूँ तुमको शिवालय में ले जाने। वह शांतिधाम है निराकारी शिवालय और सुखधाम है साकारी शिवालय। तो इस समय बाप तुम बच्चों को रिफ्रेश कर रहे हैं। बाप के सम्मुख बैठे हो ना। बुद्धि में निश्चय तो है बाबा आया हुआ है। बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। यह भी जानते हो हम आत्माएँ उस बाबा के बच्चे हैं। फिर पार्ट बजाने लिए इस बाबा के बने हैं। कितना समय तुमको लौकिक बाबाएँ मिलते हैं? (सतयुग से लेकर) हाँ, सतयुग से लेकर सुख और दुख का पार्ट बजाया है। तुम अभी जानते हो हमारा दुख का पार्ट पूरा होता है। सुख का पार्ट भी 21 जन्म बजाया है। फिर आधा कल्प दुख का पार्ट बजाया। बाबा ने तुमको स्मृति दिलाई है। बाप पूछते हैं बरोबर ऐसे है ना! अभी फिर तुमको सुख का पार्ट बजाना है। आधा कल्प इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भी भरतू होती है। फिर खाली हो जाती है। फिर बाप भरतू करते हैं। तुम्हारे गले में विजय माला पड़ी है। यह विजय माला है ना। गले में ज्ञान की माला है। बरोबर हम चक्र फेरते रहते हैं–सतयुग-त्रेता, द्वापर-कलियुग। फिर आते हैं इस स्वीट संगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शांतिधाम कोई स्वीट नहीं। सभी से स्वीट है पुरुषोत्तम संगम कल्याणकारी संगमयुग। ड्रामा में तुम्हारा यह अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लक्की हो। बेहद के बाप के तुम बनते हो। वह आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। कितनी ऊँच, कितनी सहज पढ़ाई है! कितना तुम धनवान बनत हो! इसमें कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है। डॉक्टर, इंजीनियर आदि सीखने कितने मेहनत करते हैं। हमको तो वर्सा मिलता है। बाप की कमाई पर बच्चे बैठते हैं ना। तुम यह पढ़कर 21जन्मों की सच्ची कमाई करते हो। वहाँ तुमको कोई घाटा नहीं पड़ता है। तो बाप को याद करना पड़े। इनको ही अजपा जाप कहा जाता है। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। बाप भी कहते हैं मैं आया हुआ हूँ। दोनों की ताली बजेगी ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जावेंगे। 5 विकारों रूपी रावण ने तुमको पापात्मा बनाया है। फिर पुण्यात्मा भी बनना है। यह भी बुद्धि में आना चाहिए। हम बाप की याद से पवित्र बनकर फिर घर जावेंगे बाप के साथ। फिर इस पढ़ाई से हमको माइट मिलती है। देवी-देवताओं के धर्म लिए ही कहा जाता है रीलिजन इज माइट। बाप तो है सर्वशक्तिवान। तो बाबा से हमें विश्व में शांति स्थापन करने की ताकत मिलती है। वह बादशाही हमसे कोई छीन न सके, इतनी ताकत मिलती है। राजाओं के हाथ में देखो कितनी ताकत आ जाती है। कितना उनसे डरते हैं। एक राजा की कितनी प्रजा। कितना लश्कर आदि होते हैं; परंतु वह है अल्पकाल की ताकत। अभी तुम जानते हो हमको सर्वशक्तिवान बाप से ताकत मिलती है विश्व पर राज्य करने की, तब तो रहता है ना। देवताएँ प्रैक्टिकल में नहीं हैं तो भी कितना लव रहता है। जब सम्मुख होंगे तो प्रजा का कितना लव होगा। याद की यात्रा से यह सभी

तुम सभी ताकत ले रहे हो। यह बातें भूलो नहीं। याद करते-2 तुम बहुत ताकत वाले बन जाते हो। सर्वशक्तिवान और कोई को नहीं कहा जाता। सभी को शक्ति मिलती है। इस समय कोई में भी शक्ति नहीं है। सभी हैं तमोप्रधान। फिर सभी आत्माओं को एक से ही शक्ति मिलती है। फिर अपनी राजधानी में आकर अपना-2 पार्ट बजाते हैं। अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर फिर ऐसे ही नम्बरवार शक्तिवान बनते हैं। पहले नम्बर की है इन देवताओं में शक्ति। यह ल॰ना॰ बरोबर सारे विश्व के मालिक थे ना। तुम्हारी बुद्धि में सारी सृष्टि के चक्र का ज्ञान है। जैसे तुम्हारी आत्मा में यह नॉलेज है वैसे बाबा की आत्मा में भी सारी नॉलेज है। अभी तुमको ज्ञान दे रहे हैं। ड्रामा में पार्ट भरा हुआ है, जो रिपीट होता रहता है। फिर वह पार्ट 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो तुम सतयुग में राज्य करते हो तो बाप रिटायर में रहते हैं। फिर कब स्टेज पर आते हैं जब तुम दुःखी होते हो। तुम जानते हो उनके अंदर सारा रिकॉर्ड भरा हुआ है। कितनी छोटी आत्मा है। उनमें कितनी समझ रहती है। बाप आकर कितनी समझ देते हैं। फिर वहाँ सतयुग में तुम यह सभी भूल जाते हो। सतयुग में तुमको यह नॉलेज होती ही नहीं। वहाँ तुम सुख भोगते रहते हो। यह भी अभी तुम समझते हो सतयुग हम सो देवता सुख भोगते हैं। अभी हम सो ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता बन रहे हैं। यह ज्ञान भी बुद्धि में अच्छी रीत धारण करना है। किसको समझाने में खुशी होती है ना। तुम जैसे कि प्राण दान देते हो। कहते हैं काल सभी को आकर ले जाते हैं। काल आदि कोई ... नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा है। आत्मा कहती है मैं एक शरीर छोड़ चला जाता हूँ। फिर दूसरा लेता हूँ। मुझे कोई काल नहीं खाता है। आत्मा को फीलिंग आती है। आत्मा जब गर्भ में रहती है तो सा॰ कर दुख भोगती है। अंदर सज़ा भोगती है। इसलिए इनको कहा जाता है गर्भजेल। यह ड्रामा कितना वण्डरफुल बना हुआ है! गर्भजेल में सज़ा खाते अपना सा॰ करते रहते हैं। सज़ा क्यों मिली सा॰ तो करावेंगे ना। यह यह बेकायदे काम किया है। इनको दुख दिया है। वहाँ सभी सा॰ होते हैं। फिर भी बाहर आकर पापात्मा बन जाते हैं। सभी पाप भस्म कैसे होंगे, सो तो बच्चों को समझाया है। इस याद की यात्रा से और स्वदर्शनचक्र फिराने से तुम्हारे पाप कटेंगे। बाप कहते भी हैं–मीठे-2 स्वदर्शनचक्रधारी बच्चो! तुम 84 का स्वदर्शनचक्र फिरावेंगे तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। चक्र को भी याद करना है। किसने यह ज्ञान दिया, उनको भी याद करना पड़े। बाबा हमको स्वदर्शनचक्रधारी बना रहे हैं। बनाते तो हैं; परंतु फिर रोज़2 नये-2 आते हैं तो उन्हों को रिफ्रेश करना होता है। तुमको सारा ज्ञान मिलता है। अभी तुम जानते हो हम यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। 84 का चक्र लगाया, अभी फिर वापस जाना है। ऐसे चक्र फिराते रहते हो? बाप जानते हैं बहुत बच्चे भूल जाते हैं। चक्र फिराने में कोई तकलीफ नहीं है। फुर्सत तो बहुत ही मिलती है। पिछाड़ी में तुम्हारी स्वदर्शनचक्रधारी की अवस्था रहेगी। तुमको ऐसा बनना है। सन्यास(ी) लोग तो यह शिक्षा दे न सके। स्वदर्शनचक्र को गुरु लोग ही जानते नहीं हैं। वह तो सिर्फ कहेंगे चलो गंगा जी पर। कितने स्नान करते हैं। बहुत स्नान करने से गुरुओं को आमदनी होती है। घड़ी-2 यात्रा पर जाते हैं। अभी उस यात्रा और इस यात्रा में फर्क देखो कितना है। यह यात्रा, वह सभी यात्राएँ छुड़ा देती है। यह यात्रा कितनी सहज है। चक्र भी फिराओ। गीत भी है ना चारों तरफ लगाये फेरे.... फिर भी हरदम दूर रहे। बेहद के बाप से दूर रहे, यह तुमको महसूसता आती है। वह लोग इस अर्थ को ही नहीं जानते। अभी तुम जानते हो। बहुत फेरे लगाते रहे। अभी इन फेरों से तुम छूट गये हो। फेरे लगाते कोई नज़दीक नहीं आये हैं, और ही दूर होते गये। अभी तुम जानते हो बाप को भी ड्रामा के प्लैन अनुसार आना पड़ता है। सभी को साथ ले जावेंगे। बाबा को आना ही पड़े। बाप कहते हैं मेरी मत पर तुमको चलना ही है। पवित्र बनना पड़ेगा। इस दुनिया को देखते हुये देखना नहीं है। जब तक नया मकान बनकर तैयार हो जाये, तब तक पुराने में ही रहना पड़ता है। बाप संगम पर ही आते हैं वर्सा देने। बेहद के बाप का है बेहद का वर्सा। बच्चे जानते हैं बेहद के बाप का वर्सा हमारा है। उस खुशी में रहते हैं। अपनी कमाई भी करते हैं और बाप का वर्सा भी

मिलता है। तुमको तो वर्सा ही मिलता है। वहाँ तुमको पता नहीं पड़ेगा स्वर्ग का वर्सा हमको कैसे मिला। वहाँ तो तुम्हारी लाइफ बहुत ही सुखी रहती है; क्योंकि तुम बाप को याद कर माइट लेते हो। पाप काटने वाला पतित-पावन एक ही बेहद का बाप है। बाप को याद करने, स्वदर्शनचक्र फिराने से ही तुम्हारे पाप कटने हैं। यह अच्छी रीत नोट करो। यही समझाना बस है। आगे चल तुमको तिक-2 नहीं करनी पड़ेगी। एक इशारा ही बस है। बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह 84 का चक्र समझना है। गाया भी जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। अभी है संगम। तुम जानते हो सतयुग-त्रेता, द्वापर पास्ट हो गया है। तुमको अभी स्मृति आई है। और कोई मनुष्य की बुद्धि में नहीं रहता। तुम्हारी बुद्धि में है। हरेक युग को 1250 वर्ष देते हो। 1250 वर्ष सतयुग, उनकी निशानी यह ल॰ना॰ हैं। सतयुग में इन्हों का राज्य था। फिर त्रेता में है राम का। डिनायस्टी चलती है ना। फिर इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट का चला है। तुम्हारी बुद्धि में मुख्य-2 तो सभी हैं, बाकी बाकी छोटे-मोटे को तो याद नहीं करना है। कल्प कोई लाखों वर्ष का नहीं है। यह तो कल की बात है। पुरुषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी कोई नहीं जानते हैं। उत्तम ते उत्तम पुरुष और स्त्री बनते हैं। तुम नर से ना॰, नारी से ल॰ बनने आये हो, यह तो याद है ना। और कोई की भी बुद्धि में यह बात नहीं आती। यहाँ तुम आते हो, बुद्धि में है हम जाते हैं बाप दादा पास। उनसे नई दुनिया स्वर्ग का वर्सा लेने। बाप कहते हैं स्वदर्शनचक्रधारी बनने से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। अभी जो तुम्हारे जीवन हीरे जैसा बनाते हैं उनको देखो। यह भी तुम समझते हो। इसमें देखने की कोई बात ही नहीं। यह तो तुम दिव्य बुद्धि द्वारा जानते हो। आत्मा ही पढ़ाती है इस शरीर द्वारा। यह अभी ज्ञान मिला है। हम जो कर्म करते हैं, आत्मा ही शरीर लेकर कर्म करती है। बाबा को भी पढ़ाना है। उनका नाम तो सदैव शिव ही है। शरीर के नाम बदलते हैं। यह शरीर तो हमारा नहीं है। यह इनकी मिलकियत है। शरीर आत्मा की मिलकियत होती है, जिससे पार्ट बजाती है। यह तो बिल्कुल ही सहज समझने की बातें हैं। कृष्ण की तो अपनी आत्मा है। उनके शरीर का कृष्ण पड़ा है। आत्माएँ तो सभी हैं। सभी के शरीर का नाम अलग-2 होता है। यह फिर भी है परमआत्मा। सुप्रीम आत्मा। ऊँच ते ऊँच। मनुष्य मूँझे हुये हैं। इसलिए कृष्ण का नाम लगा दिया है। अभी तुम समझते हो भगवान तो एक ही है। क्रियेटर एक। बाकी सभी हैं रचना, पार्ट बजाने वाले। यह भी जान गये हो कैसे आत्माएँ आती हैं। पहले-2 आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माएँ आती हैं थोड़ी। फिर पिछाड़ी में लायक बनते हैं पहले आने लिए। यह सृष्टिचक्र की जैसे माला है जो फिरती रहती है। माला को तुम फिराते हो तो सभी दानों का चक्र फिरता है ना। सतयुग में भक्ति का ज़रा भी अंश नहीं होता। बाप ने समझाया है भक्ति का अर्थ ही है दुर्गति मार्ग, सीढ़ी उतरना। ज्ञान मार्ग है सीढ़ी चढ़ना। मूल बात बाप एक ही समझाते हैं–हे आत्माएँ! मामेकं याद करो। तुमको घर ज़रूर लौटना है। विनाश सामने खड़ा है। याद से ही पाप कटेंगे और फिर सज़ा भी खाने से छूट जावेंगे। नहीं तो सज़ा भी बहुत खानी पड़ेगी।

मैं तुम बच्चों पास कितना अच्छा मेहमान हूँ थोड़े दिन का। सुप्रीम बाप, परमपिता, सारे विश्व का मालिक तुम्हारे पास मेहमान है। मैं सारे विश्व को चेंज करता हूँ। पुराने विश्व को नया बना देता हूँ। तुम भी जानते हो बाबा कल्प-2 आकर विश्व को चेंज कर पुराने से नया बना देते हैं। नई से पुरानी, पुरानी से नई होती है ना। तुम (इ)स समय चक्र फिराते रहते हो। सारा चक्र बुद्धि में है। बाप की बुद्धि में ज्ञान है। वर्णन करते हो। तुम्हारी बुद्धि (में) भी है चक्र कैसे फिरता है। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। उनकी श्रीमत पर हम पावन बनते हैं। जितना अच्छा पावन बनेंगे, याद से ही पावन बनते जावेंगे, फिर ऊँच पद पावेंगे। पुरुषार्थ भी करना ज़रूरी है। पुरुषार्थ कराने लिए कितने चित्र आदि बनाते हैं। जो आते हैं उनको तुम 84 का चक्र समझाते हो। बाप को याद करने से तुम पतित से पावन बन जावेंगे। अभी तमोप्रधान बने हो। पहले सतोप्रधान थे तो कितने थोड़े

थे। अभी तो ढेर हो गये हैं और फिर दूसरे-2 धर्म भी आते गये हैं। खेल सारा तुम्हारे पर ही हैं। 84 का चक्र भी पहले-2 तुम खाते हो। तुमसे पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो? बोलो, हम भारत को यह (स्वर्ग) बनाते हैं। भारत 100% सॉलवेंट था। हम यह भारत की सेवा करते हैं। हम यह देवता बन रहे हैं। चलन सुधार रहे हैं। कैरेक्टर्स है ही पवित्रता पर। इन्हों के आगे गाते भी हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... मेरे में कोई गुण नाहीं। वह तो जिनके आगे जाते उनको कहते रहते हैं। अक्सर करके ल॰ना॰ के मंदिर में जाये महिमा गाते हैं। यह है ही सतयुग के मालिक। इनको ही कहते हैं आपे ही तरस परोई..... यह नहीं जानते कि यह ल॰ना॰ ही छोटेपन में राधे-कृष्ण थे। रामचन्द्र के आगे नहीं कहेंगे। बाप को ही कहते हैं रहम करो। आशीर्वाद करो। अभी अपने आप तुमको आशीर्वाद मिल रही है। बाप ऊपर से आकर तुमको पढ़ाते हैं। वह बाप भी है, शिक्षक भी है, गुरु भी है। यह गुण तो कोई भी मनुष्य में होते ही नहीं। बाप भी है, वही टीचर बन पढ़ाते हैं, फिर साथ भी ले जाते हैं। उनको कहा जाता है शिव की बारात। बुद्धि से समझते हो सतयुग में तो बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। यहाँ तो बहुत ही जीवात्माएँ अथवा मनुष्य हैं। सतयुग में बहुत ही कम होंगे। बाकी आत्माएँ कहाँ गई, बाप बैठ बतलाते हैं। जीव अर्थात् शरीर भस्म हो जाते हैं। बाकी आत्माएँ सभी वापिस चली जाती हैं। तुम्हारी आत्माएँ सुखधाम में जाती हैं, बाकी सभी शांतिधाम में चले जाते हैं। तुम जब सुखधाम में जाते हो तो जय-जयकार हो जाती है। अभी कितनी हाहाकार है। अंत में भी हाहाकार होगा। नेचरल कैलेमिटीज़ भी होंगी। यह सारी दुनिया नहीं रहेगी। सारी दुनिया पर इन ल॰ना॰ का राज्य होगा। सभी पवित्र बन जावेंगे। पतित-पावन बाप आकर सारे विश्व को पावन बना देते हैं। आत्मा ही मेहनत करती है। बाप भी इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को मेहनत कराते हैं। बाप कहते हैं मैं अपना स्वीट होम छोड़कर तुम्हारे बुलावे पर मेहमान बनकर आता हूँ। कितनी इनकी इज्जत रखनी चाहिए। कितना बड़ा मेहमान है; परन्तु आधा कल्प से रावण के डंसे हुये हैं तो समझते ही नहीं हैं। ऐसे मेहमान से कैसे रिगार्ड से बात-चीत करनी चाहिए। वह स्मृति जब आवे ना। 50/60 वर्ष बाप रहते हैं; परंतु स्मृति नहीं आती। बाहर वाले तो बहुत ही सिक व प्रेम से आते हैं। बहुत ही प्रेम के आँसू बहते रहते हैं। बाबा आप तो हमारे दुःख दूर करने वाले हो। हमने बहुत ही दुख देखे हैं। बहुत ही प्रेम से आते हैं मिलने लिए। वह प्रेम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हरेक का होता है। कोई में तो पाई का भी नहीं है। एकदम निल। आटे में लून जाकर रहता है। राजा और रंक कहा जाता है ना। वहाँ है सुख के राव और रंक। वह फिर भी नई दुनिया है। ऊँच ते ऊँच राजा-रानी और प्रजा तो होते हैं ना। अभी तो है पंचायती राज्य। चुनकर फिर उन्हों को गद्दी देते हैं। आजकल तो पत्थर मारने में भी देरी नहीं करते हैं। वहाँ कोई ऐसे गंदे चलन का नाम-निशान नहीं रहता है। तो तुम बच्चों को यह सारी स्मृति रखनी चाहिए। .... बुद्धि में ज्ञान है, सतयुग-त्रेता..... यह चक्र फिरता रहता है। अभी फिर हम वापिस जाते हैं। बाप आये ..... वापिस ले जाने। बाबा को याद करने से कितना सुख मिल ..... है। ऐसे बाप को याद तो करेंगे ना। और कोई मेहनत नहीं देते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। एमऑबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह प्रिंस बनना है। कृष्णपुरी का, क्रिश्चयन की पुरी से कनेक्शन है। लेन-देन का हिसाब-किताब भी उनसे हैं। यह सभी बातें ध्यान में रख कितना खुश होना चाहिए। सदैव तृप्त आत्मा। सतयुग में तुम तृप्त आत्मा रहते हो। यहाँ तो कितनी भूख है। तृप्त नहीं हैं। तुम बच्चों के अंदर में तो खुशी का नगाड़ा बजना चाहिए। बाबा तो कुछ भी छोड़ने लिए नहीं कहते हैं। भल नौकरी करो, जो चाहिए सो करो। कैप्टन बनो। मार्शल बनो। भल गोली चलाओ। बाबा ऐसे नहीं कहते गोली न चलाओ। यह हिंसा है। नहीं। अगर तुम यह नहीं करोगे तो मुसलमान लोग भारत को ही खलास कर देंगे। गीता में है युद्ध के मैदान में जो मरेगा वह स्वर्ग जावेगा; परंतु युद्ध का मैदान कौन-सा? इस संगम पर ही 5 विकारों से युद्ध की बात है। बाकी बाप कहते हैं तुम शिवबाबा को याद करो। याद करते गोली छोड़ो। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।